Q No मुद्रास्फीति (Inflation) के विभिन्न प्रकार

(Different Types of Inflation – विस्तृत व्याख्या)

मुद्रास्फीति (Inflation) वह आर्थिक स्थिति है जिसमें किसी देश में वस्तुओं एवं सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर (General Price Level) में एक निश्चित अवधि तक लगातार वृद्धि होती रहती है। इसके परिणामस्वरूप मुद्रा की क्रय-शक्ति (Purchasing Power) घट जाती है, अर्थात् पहले जितनी राशि से अधिक वस्तुएँ खरीदी जा सकती थीं, अब उतनी राशि से कम वस्तुएँ खरीदी जा सकती हैं।

मुद्रास्फीति किसी भी अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण आर्थिक समस्या है। यदि यह नियंत्रित सीमा में रहे तो आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करती है, लेकिन यदि यह अत्यधिक बढ़ जाए तो गरीबी, बेरोजगारी, आय असमानता तथा आर्थिक अस्थिरता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

अर्थशास्त्र में मुद्रास्फीति का वर्गीकरण मुख्यतः (1) कारणों के आधार पर तथा (2) गति (दर) के आधार पर किया जाता है।

I. कारण (Causes) के आधार पर मुद्रास्फीति

1. माँग-प्रेरित मुद्रास्फीति (Demand-Pull Inflation)

जब अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं की कुल माँग (Aggregate Demand) उनकी कुल आपूर्ति (Aggregate Supply) से अधिक हो जाती है, तब वस्तुओं की कीमतें बढ़ने लगती हैं। इस स्थिति को माँग-प्रेरित मुद्रास्फीति कहते हैं।

यह स्थिति सामान्यतः आर्थिक विकास, आय में वृद्धि, सरकारी व्यय में वृद्धि, बैंक ऋणों के विस्तार तथा निवेश में वृद्धि के कारण उत्पन्न होती है।

कारण

- उपभोक्ताओं की आय में वृद्धि
- सरकारी खर्च में वृद्धि
- बैंक ऋणों में विस्तार
- जनसंख्या वृद्धि
- निर्यात में वृद्धि

उदाहरण

यदि बाजार में 100 मोबाइल फोन उपलब्ध हैं, लेकिन उन्हें खरीदने वाले 150 ग्राहक हैं, तो मोबाइल की कीमत बढ़ जाएगी।

विशेषताएँ

कुल माँग में वृद्धि।

उत्पादन क्षमता सीमित होती है।

रोजगार एवं आय में वृद्धि के साथ कीमतें बढ़ती हैं।

2. लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति (Cost-Push Inflation)

जब उत्पादन लागत बढ़ जाती है और उत्पादक अपने बढ़े हुए खर्च की भरपाई के लिए वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें बढ़ा देते हैं, तब लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है।

लागत बढ़ने के प्रमुख कारण

मजदूरी में वृद्धि

कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि

बिजली एवं ईंधन की कीमतों में वृद्धि

परिवहन लागत में वृद्धि

करों (Taxes) में वृद्धि

उदाहरण

यदि पेट्रोल और डीज़ल की कीमत बढ़ जाती है, तो परिवहन महँगा हो जाता है। परिणामस्वरूप लगभग सभी वस्तुओं के दाम बढ़ जाते हैं।

विशेषताएँ

- उत्पादन लागत बढ़ने से कीमतें बढ़ती हैं।
- उत्पादन में कमी आ सकती है।
- बेरोजगारी बढ़ने की संभावना रहती है।

3. वेतन-मूल्य मुद्रास्फीति (Built-in Inflation / Wage-Price Spiral)

जब श्रमिक महँगाई के कारण अधिक वेतन की माँग करते हैं और उद्योगपति वेतन वृद्धि के कारण वस्तुओं के मूल्य बढ़ा देते हैं, तो फिर बढ़ी हुई कीमतों के कारण श्रमिक पुनः वेतन बढ़ाने की माँग करते हैं। इस निरंतर चलने वाले चक्र को वेतन-मूल्य मुद्रास्फीति कहते हैं।

विशेषताएँ

- मजदूरी एवं कीमतों में लगातार वृद्धि।
- महँगाई की अपेक्षाओं पर आधारित।
- इसे Wage-Price Spiral भी कहा जाता है।

4. आयातित मुद्रास्फीति (Imported Inflation)

जब विदेशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं की कीमत बढ़ जाती है अथवा घरेलू मुद्रा का मूल्य विदेशी मुद्रा की तुलना में घट जाता है, तब आयातित वस्तुएँ महँगी हो जाती हैं और देश में मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है।

उदाहरण

भारत अपनी आवश्यकता का बड़ा भाग कच्चे तेल के रूप में आयात करता है। यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमत बढ़ जाए, तो भारत में पेट्रोल एवं डीज़ल महँगे हो जाते हैं।

विशेषताएँ

आयातित वस्तुओं की कीमतों से प्रभावित।

विकासशील देशों में अधिक देखने को मिलती है।

5. मौद्रिक मुद्रास्फीति (Monetary Inflation)

जब अर्थव्यवस्था में मुद्रा की मात्रा उत्पादन की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है, तब अधिक धन सीमित वस्तुओं का पीछा करता है और कीमतें बढ़ जाती हैं।

कारण

केंद्रीय बैंक द्वारा अधिक मुद्रा जारी करना।

अत्यधिक बैंक ऋण।

सरकारी घाटे की पूर्ति हेतु नोट छापना।

उदाहरण

यदि वस्तुओं का उत्पादन 5% बढ़े लेकिन मुद्रा की मात्रा 15% बढ़ जाए, तो कीमतें बढ़ने लगेंगी।

6. लाभ-प्रेरित मुद्रास्फीति (Profit-Induced Inflation)

जब बड़ी कंपनियाँ अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से कृत्रिम रूप से कीमतें बढ़ा देती हैं, तब लाभ-प्रेरित मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है।

7. संरचनात्मक मुद्रास्फीति (Structural Inflation)

यह विकासशील देशों में उत्पादन, परिवहन, भंडारण, कृषि तथा वितरण व्यवस्था की कमजोरियों के कारण उत्पन्न होती है।

उदाहरण

कृषि उत्पादन कम होने या आपूर्ति श्रृंखला बाधित होने पर खाद्यान्न महँगे हो जाते हैं।

II. गति (Rate) के आधार पर मुद्रास्फीति

1. रेंगती मुद्रास्फीति (Creeping Inflation)

इसमें कीमतें बहुत धीमी गति से बढ़ती हैं। सामान्यतः इसकी दर 3% तक मानी जाती है।

विशेषताएँ

- अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक।
- निवेश एवं उत्पादन को प्रोत्साहित करती है।
- सरकार आसानी से नियंत्रित कर सकती है।

2. चलती मुद्रास्फीति (Walking Inflation)

जब कीमतें मध्यम गति से (लगभग 3% से 10%) बढ़ती हैं, तब इसे चलती मुद्रास्फीति कहते हैं।

प्रभाव

लोगों की क्रय-शक्ति घटने लगती है।

बचत का मूल्य कम होने लगता है।

सरकार को नियंत्रणात्मक उपाय अपनाने पड़ते हैं।

3. दौड़ती मुद्रास्फीति (Running Inflation)

जब कीमतें बहुत तेज़ी से (लगभग 10% से 20% या उससे अधिक) बढ़ती हैं, तब इसे दौड़ती मुद्रास्फीति कहते हैं।

प्रभाव

उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

व्यापार में अनिश्चितता बढ़ती है।

गरीब एवं मध्यम वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।

4. अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation)

जब कीमतें अत्यधिक तेजी से और अनियंत्रित रूप से बढ़ती हैं, तब उसे अति-मुद्रास्फीति कहते हैं।

विशेषताएँ

मुद्रा का मूल्य तेजी से गिर जाता है।

लोग वस्तुओं का विनिमय (Barter) करने लगते हैं।

आर्थिक व्यवस्था संकट में पड़ जाती है।

उदाहरण

जर्मनी (1923), जिम्बाब्वे (2008) तथा वेनेज़ुएला में अति-मुद्रास्फीति के उदाहरण देखे गए हैं।

III. अन्य प्रकार

1. कोर मुद्रास्फीति (Core Inflation)

इसमें खाद्य पदार्थों और ईंधन जैसी अस्थिर कीमतों वाली वस्तुओं को शामिल नहीं किया जाता। यह दीर्घकालीन महँगाई का बेहतर संकेतक माना जाता है।

2. हेडलाइन मुद्रास्फीति (Headline Inflation)

इसमें सभी वस्तुओं एवं सेवाओं की कीमतें शामिल होती हैं। आमतौर पर समाचारों में इसी मुद्रास्फीति का उल्लेख किया जाता है।

- मुद्रास्फीति के प्रमुख प्रभाव
- मुद्रा की क्रय-शक्ति में कमी।
- गरीब एवं निश्चित आय वाले लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव।
- बचत का वास्तविक मूल्य घट जाता है।
- निवेश एवं उत्पादन पर मिश्रित प्रभाव।
- आय और संपत्ति की असमानता बढ़ सकती है।
- आर्थिक विकास की गति प्रभावित होती है।
- निर्यात और आयात पर प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

मुद्रास्फीति आधुनिक अर्थव्यवस्था की एक महत्वपूर्ण आर्थिक समस्या है। इसके विभिन्न प्रकारों–जैसे माँग-प्रेरित, लागत-प्रेरित, मौद्रिक, आयातित, वेतन-मूल्य, संरचनात्मक, रेंगती, चलती, दौड़ती तथा अति-मुद्रास्फीति–का अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि कीमतें क्यों बढ़ती हैं और सरकार तथा केंद्रीय बैंक उन्हें नियंत्रित करने के लिए कौन-सी नीतियाँ अपनाते हैं। नियंत्रित मुद्रास्फीति आर्थिक विकास के लिए लाभकारी मानी जाती है, जबकि अनियंत्रित मुद्रास्फीति आर्थिक अस्थिरता, बेरोजगारी, गरीबी तथा सामाजिक असमानता को बढ़ावा देती है। इसलिए किसी भी देश के संतुलित और सतत आर्थिक विकास के लिए मुद्रास्फीति पर प्रभावी नियंत्रण आवश्यक है।